TO JOIN OUR UPSC PAID GROUP

WHATSAPP GROUP ➡ 9818323004

THE HINDU ANALYSIS – 08 JUNE 2023

संपादकीय 1: प्रौद्योगिकी के बहुप्रतीक्षित ध्रुव तारे के रूप में एक वैश्विक व्यवस्था

परिचय

- जब से 2000 में डॉट-कॉम बुलबुला फूटा, प्रौद्योगिकी के विकास के तीव्र पैमाने और गति ने हमारे समाजों और दैनिक जीवन को मौलिक और विघटनकारी रूप से बदल दिया है। हालांकि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि इसने जीवन को आसान बना दिया है, इसने जटिल चुनौतियां भी पेश की हैं जो राजनीति और शासन में कुछ मौलिक धारणाओं पर फिर से विचार करने का आह्वान करती हैं।

राष्ट्र-राज्य की धारणा को चुनौती

- **सबसे पहले**, एक राष्ट्र-राज्य के रूप में एक क्षेत्रीय रूप से सीमित संप्रभु राज्य है। हालाँकि, एक भौगोलिक इकाई के राष्ट्र-राज्य की यह मूलभूत धारणा जिसमें नागरिक रहते हैं, प्रौद्योगिकी के कारण बड़े पैमाने पर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।

- जबकि भौतिक आक्रमण/आक्रमण के खिलाफ भौगोलिक सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए अभी भी आवश्यक है, अब राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं पर कई बाहरी घटनाएं हो रही हैं, अर्थात साइबर **हमले,** जो उनके सामाजिक-आर्थिक को चुनौती देने के लिए भौतिक सीमाओं पर एक लहरदार प्रभाव डालते हैं और राजनीतिक अस्तित्व।

- **वेब3** के आगमन , बड़े पैमाने पर पीयर-टू-पीयर नेटवर्क और ब्लॉकचेन ने वित्तीय और न्यायिक दायरे से बाहर रहते हुए भी, राज्य और गैर-राज्य दोनों, अभिनेताओं को व्यापार, वाणिज्य, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों को प्रभावित करने की अनुमति दी है।

- **दूसरा**, उच्च प्रौद्योगिकी के युग में **पारंपरिक भौगोलिक सीमाओं के घटते महत्व** के कारण भूगोल-आधारित नियम अब आसानी से लागू करने योग्य नहीं हैं।

- अब, "आभासी गतिविधि" का कोई भी रूप किसी देश की सीमाओं के दायरे तक ही सीमित नहीं है; डेटा वर्ल्ड वाइड वेब की श्रृंखला पर यात्रा करता है और अब तक अकल्पनीय गति से दुनिया भर में फैल गया है।

- **इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब इस तरह की गतिविधियां किसी विशेष भौगोलिक रूप से निर्धारित राष्ट्र-राज्य के कानूनों का उल्लंघन करती हैं, तो विश्व स्तर**

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 9818323004

पर स्वीकृत मानदंड के अभाव में, उस विशेष भूगोल में कानून को लागू करना और अड़ियल अभिनेताओं को कानून के तहत बुक करना बेहद मुश्किल होता है। राष्ट्र-राज्य के कानून।

- अन्य भौगोलिक क्षेत्रों से सहयोग के बिना अकाट्य साक्ष्य एकत्र करना कठिन है।
- इसके अलावा, प्रौद्योगिकी की सार्वभौमिक प्रकृति के कारण किसी भी देश-विशिष्ट कानून की प्रयोज्यता स्थापित करना भी मुश्किल है, जिसके कारण प्रवर्तनीयता में समस्याएं आती हैं।
- **तीसरा** , नई तकनीकों के उद्भव ने राष्ट्र-राज्य सरकार की इन तकनीकों को प्रशासित और विनियमित करने की अक्षमता और अक्षमता को उजागर किया है।
- अब राष्ट्र-राज्य ही एकमात्र माध्यम नहीं है जिसके माध्यम से बहुराष्ट्रीय निगमों, गैर-सरकारी संगठनों और सुपरनैशनल संगठनों, दोनों वैध और नाजायज, राज्य और गैर-राज्य अभिनेताओं को संचालित करने की आवश्यकता है।
- इन संस्थाओं ने पारंपरिक प्रशासनिक और नियामक संस्थानों से स्वतंत्र, बाकी दुनिया के साथ सहयोग करने के लिए भौतिक सीमाओं को पार कर लिया है।

संचालन जटिलताओं और प्रौद्योगिकी

- डेटा हमारे समय का सबसे महत्वपूर्ण कच्चा माल बन गया है, और केवल कुछ ही कंपनियां अब इस पर अद्वितीय आर्थिक शक्ति और प्रभाव रखती हैं।
- ये मेटा-प्लेटफ़ॉर्म हैं: उनका विशाल आकार उन्हें उन सूचनाओं की मात्रा को लगातार बढ़ाने की अनुमति देता है जिनका वे विश्लेषण करते हैं और उन एल्गोरिदम को परिष्कृत करते हैं जिनका उपयोग वे हमें और हमारी गतिविधियों को नियंत्रित नहीं करते हैं।
- ऐसे परिदृश्य में, **प्रौद्योगिकी के लिए एक सिद्धांत-आधारित वैश्विक व्यवस्था** प्रौद्योगिकी को अपनाने और प्रसार में प्रवर्तनीयता की चुनौतियों को सुव्यवस्थित करने में मदद करेगी और उभरती अर्थव्यवस्थाओं को उनकी संप्रभुता की उभरती परिभाषाओं से निपटने के तरीके पर मार्गदर्शन प्रदान करेगी।
- इसके अलावा, जैसा कि हमने COVID-19 महामारी के मामले में देखा है, भविष्य की वैश्विक महामारियों के प्रबंधन में आगे बढ़ने का तरीका शायद डिजिटल स्वास्थ्य को अपनाना है। इसलिए, भारत को डेटा ट्रांसफर और डेटा गोपनीयता कानून की आवश्यकता है।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8051038169

- लेकिन ये कानून, अकेले में, केवल इतना ही करने में सक्षम होंगे जब तक कि सभी देशों द्वारा भरोसेमंद वैश्विक सिद्धांत-आधारित विनियमन संरचना इसे सुगम न करे।

आगे बढ़ने का रास्ता

- भारत के साथ, G-20 के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में, इसमें नेतृत्व करने का यह सही अवसर है, जैसा कि इसने पहले अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन या आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन जैसी हरित पहलों में किया है।

UPSC.DESIRE WHATSAPP GROUP 8054038168

संपादकीय 2: भारतीय राजनीति, एक लोकतांत्रिक निदान

परिचय

- हमारी संसदीय प्रणाली, जिसे कुछ देखभाल के साथ तैयार किया गया था, कानून बनाने के लिए मांगी गई थी; कार्यपालिका की जवाबदेही; कराधान प्रस्तावों की स्वीकृति और राष्ट्रीय वित्त का नियंत्रण, और सार्वजनिक हित और चिंता के मामलों की चर्चा।

भारतीय संविधान

- भारत ने कहा, '**राज्यों का संघ होगा**' और संविधान के भाग XI के प्रावधान संघ और राज्यों के बीच संबंधों को नियंत्रित करेंगे।
- बीआर अंबेडकर ने इस बात पर जोर दिया था कि सामाजिक लोकतंत्र का अंतिम उद्देश्य स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की त्रिमूर्ति है, जिसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के प्रभावी कामकाज के माध्यम से हासिल किया जाता है।
- इन मूलभूत सिद्धांतों को संविधान की प्रस्तावना में लिखा गया था और मूल संरचना सिद्धांत में भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रबलित किया गया था।

एक गिरावट

- चुनौती पहले के साथ शुरू होने वाली प्रमुख सामग्री के प्रभावी कामकाज में थी। **उपलब्ध आंकड़े साल-वार, सत्र-वार और दशक-वार इसके कामकाज में** उत्तरोत्तर गिरावट को स्पष्ट करते हैं।
- यह स्पष्ट है कि संसद ने जांच, जवाबदेही और निरीक्षण के एक साधन के रूप में अपनी प्रभावशीलता खो दी है। इसके बजाय, विरोध में तैयार किए गए व्यवधान के उपकरण और सरकार में निर्दोष रूप से विमुख होने की कोशिश की जाती है।
- इन सबसे ऊपर, दिन का नेतृत्व एक अध्ययनित मौन या उपस्थिति की कमी, या दोनों और स्थायी **समितियों** के कामकाज के प्रति ध्यान देने योग्य शिथिलता के साथ इसका समर्थन करता है। अंतिम परिणाम जांच, बहस और असंतोष की घटती प्रक्रिया है।
- समय-समय पर होने वाले चुनावों के अलावा, सूचित राय इसके पटरी से उतरने और इसके परिणाम के बारे में चिंतित है। **सोशल मीडिया का उद्भव,** नागरिक समाज में प्रतिनिधि के लिए एक प्रतिद्वंद्वी दावेदार, संसद के प्रतिनिधित्व पर सवाल उठाने या पूरक करने के लिए पूरक और विरोधी दोनों के रूप में उभरा है।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8054038168

- **वर्णनात्मक अर्थों में संसद उत्तरोत्तर प्रतिनिधिक बन गई है, साथ ही साथ यह कानून और शासन** के संदर्भ में अनुत्तरदायी भी हो गई है और रैंकों को बंद करके जवाबदेही से बचने की प्रवृत्ति हो गई है।

- इस प्रवृत्ति का एक परिणाम सरकार द्वारा **सिविल सेवा** और उसके कामकाज के चरित्र को बदलने का प्रयास है, जिससे सिविल सेवक 'परस्पर विरोधी निष्ठाओं के बीच फटे' हैं, जिससे उनकी निष्पक्ष होने की क्षमता कमजोर हो जाती है।

भारतीय लोकतंत्र: वर्तमान समय में दोष और चुनौतियां

- **समाज में बहुलवाद** और विविध सिद्धांतों, विश्वासों, भाषाओं और जीवन के तरीकों को एक ही भारतीय चरित्र में बाँधने की संबद्ध चुनौती आसान नहीं है और संसाधनों, अवसरों और स्वतंत्रताओं तक असमान पहुँच से बढ़ जाती है।

- समाज के सबसे गरीब और सबसे अमीर वर्गों के बीच **बढ़ती असमानता और आर्थिक विभाजन।**

- **सार्वजनिक उत्तरदायित्व** और निरीक्षण और सार्वजनिक भ्रष्टाचार की दयनीय स्थिति इसकी अभिव्यक्ति है। यह कानून और जाति, और समुदाय आधारित राजनीति के ढांचे को कमजोर करने से और भी बदतर हो गया है।

- **फलते-फूलते कॉरपोरेट्स, सार्वजनिक संपत्तियों के मुद्रीकरण, और पार्टियों के बढ़ते हितों के** कारण कल्याणकारी राज्य की साख कम हुई है, जो लगभग सभी संस्थानों से बच गए हैं।

- **समाज में बढ़ता ध्रुवीकरण** और विभिन्न राजनीतिक और गैर-राजनीतिक हितधारकों द्वारा विभिन्न तर्ज पर भारत के अतीत की अभिव्यक्ति।

आगे बढ़ने का रास्ता:

- **भारत के चुनाव आयोग का स्वतंत्र सचिवालय:** अप्रैल 2018 में ईसीआई ने अधिक स्वायत्तता और नियम बनाने की शक्तियों के लिए संवैधानिक संशोधन का अनुरोध किया है। सचिवालय सबसे कुशल तरीके से अपने कार्यों का निर्वहन करने में सक्षम होगा।

- जनप्रतिनिधि अधिनियम, 1951 के तहत भ्रष्ट आचरण का दोषी पाए जाने पर **उम्मीदवारों का स्थायी निष्कासन।**

- चुनाव प्रचार के लिए फंड के स्रोतों पर कड़ी निगरानी और कॉरपोरेट फंडिंग पर सीमित रोक।

UPSC DESIRE WHATSAPP GROUP 8054038168

- सरकार को आलोचना को ठीक से **खारिज करने के बजाय सुनना चाहिए** | लोकतांत्रिक मूल्यों को नष्ट करने के सुझावों पर एक विचारशील और सम्मानजनक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है।
- प्रेस और न्यायपालिका को भारत के लोकतंत्र का स्तंभ माना जाता है, जिसे किसी भी कार्यकारी हस्तक्षेप से स्वतंत्र होना आवश्यक है।
- नागरिकों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति समान रूप से सतर्क और कर्तव्यपरायण होने की आवश्यकता है।
- एक प्रक्रियात्मक लोकतंत्र की तुलना में वास्तविक लोकतंत्र पर अधिक जोर।

निष्कर्ष

- इस प्रकार समय की मांग है कि देश के नागरिक भारतीय राजनीति के संवैधानिक चरित्र को सुनिश्चित करने और उसकी रक्षा करने और विभिन्न हितधारकों की जवाबदेही तय करने के लिए तत्काल और जागरूक कदम उठाएं। तभी हम अपने संस्थापकों के सपने और उनके द्वारा किए गए चुनाव को साकार कर पाएंगे और यही हमारी राजनीति का सच्चा अमृत काल होगा।

Click here upsc.desire

Click here everyday.current.gk

UPSC WHATSAPP GROUP 8054038168